



मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्त्व

नागेश दुबे
मोहन लाल चट्टार

Published by
Satparkash Katla
SSDN PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
5A, Sahni Mansion, Ansari Road
Daryaganj, New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-47520102
E-mail: ssdn.katla@gmail.com
www.ssdnbooks.com

मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्व

© प्रो. नागेश दुबे एवं डॉ. मोहन लाल चढार

₹ 3500

सर्वाधिकार सुरक्षित। पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण 2017

ISBN: 978-93-8357-598-5

Printed at New Delhi, India

इस पुस्तक में प्रकाशित आलेख, लेखकों के अपने विचार हैं, इन विचारों से सम्पादकगण प्रकाशक अथवा मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है

पुरातन के अधुनातन व्याख्याता: 'विवेक दा' सुरेन्द्र सिंह नेगी	268
मध्यप्रदेश छत्तीसगढ़ के पुरातत्त्व के पुरोधः : आचार्य विवेक दत्त झा प्रो. रमेन्द्रनाथ मिश्र	269
बहुआयामी व्यक्तित्व : मेरा मित्र विवेकदत्त प्रो. सर्वजीत सिंह	272
स्मृति शेष प्रो. विवेकदत्त झा प्रो. सन्तोष कुमार बाजपेयी	273
प्रोफेसर विवेकदत्त झा के जीवन की कतिपय स्मृतियाँ प्रो. के.के. त्रिपाठी	274
नम्रता, स्नेह एवं दृढ़ता के प्रतीक प्रो० झा प्रो. प्रमोद कुमार खरे	280
विनम्रता की प्रतिमूर्ति: प्रो. विवेकदत्त झा प्रो. अमय सिंघई	282
प्रो. विवेकदत्त झा : दि लीजेण्ड पर्सन प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	284
प्रो. झा: एक अनुकरणीय मार्गदर्शक प्रो. नागेश दुबे	287
प्रो. विवेकदत्त झा : एक साहसी एवं प्रेरक व्यक्तित्व प्रो. आलोक श्रोत्रिय	292
जिन्दादिली की मिसाल : प्रो. विवेकदत्त झा प्रो. बी. के. श्रीवास्तव	293
प्रो. विवेक दत्त झा को जैसा मैंने जाना डॉ. आरती दुबे	296
प्रो. विवेकदत्त झा : जिनके शब्द कभी भुलाए नहीं जा सकते डॉ. (सुश्री) शरद सिंह	298
पुरातन के पारखी - प्रो. विवेकदत्त झा डॉ. मनीष झा	302
मन के महंत: विवेकदत्त झा डॉ. राकेश शर्मा	305
महान व्यक्तित्व के धनी प्रो. विवेकदत्त झा के.पी.गुरु	307
जन जन की स्मृति में प्रो झा डॉ. श्रीमती उषा तिवारी	309

जिन्दादिली की मिसाल : प्रो. विवेकदत्त झा

प्रो. बी. के. श्रीवास्तव

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के इतिहास विभाग में नियुक्ति होने के पश्चात् जब मैं यहाँ प्रथम-बार पदभार ग्रहण करने आया, उस समय मुझे यहाँ सेवारत तीन प्राध्यापकों से मिलने बाबत कहा गया। यह कहा था मेरी पत्नी डॉ. (श्रीमती) माधवी श्रीवास्तव ने उन्होंने यहाँ से एम.फिल किया था। उनके मामाजी प्रो. प्रमोद खरे के प्रो. व्ही.डी. झा अच्छे मित्र थे, इसलिए माधवी उनसे पूर्व परिचित थी। चूँकि झा साहब इतिहास विभाग के थे अतः मैं पदभार ग्रहण करने के उपरान्त उनसे मिला।

“जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है। मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।”

यह शेर तो बहुत सुना था मगर प्रो. झा साहब से मिलने के पश्चात् समझ में आया कि जिन्दादिली क्या होती है। प्रथम मुलाकात में ही वे अत्यन्त आत्मीयता एवं गर्मजोशी से मिले। हमारे इतिहास विभाग के पास ही प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग होने के कारण उनसे आये दिन मुलाकात होने लगी। विश्वविद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों के प्रति उनका व्यवहार सदैव मित्रवत रहता था। मैंने महायायावर एवं पुरातत्ववेत्ता त्रिपिटकाचार्य राहुल सांकृत्यायन पर पीएच.डी. यहाँ पदभार ग्रहण करने के उपरान्त ही की। जब ‘पुरातत्ववेत्ता के रूप में राहुल’ अध्याय का लेखन किया तब प्रो. झा साहब से मुलाकातों का सिलसिला और बढ़ गया। राहुल सांकृत्यायन का पसंदीदा शेर था—

“सैर दुनिया की गाफिल, जिन्दगानी फिर कहों। जिन्दगानी गर रही तो,

नौजवानी फिर कहों।”

राहुलजी की यायावरी उनके पुरातत्व सर्वेक्षण में मददगार साबित हुई। वस्तुतः जिन्दादिली हर हाल में खुश रहना, एवं विन्दास अन्दाज जैसे गुण यदि व्यक्ति में हों तो उसके द्वारा किये या कराये जाने वाले पुरातात्विक उत्खनन/सर्वेक्षण की गुणवत्ता और अधिक बढ़ जाती है। प्रो. झा चूँकि इन सभी गुणों से श्रोत-प्राप्त थे, अतः उनके द्वारा या उनके निर्देशन में कराये गये पुरातात्विक उत्खनन काफी सफल रहे। इनमें त्रिपुरी (जबलपुर), तुमैन (गुना), मल्हार (बिलासपुर), नांदूर (रायसेन), एवं एरण (सागर) जैसे पुरातात्विक उत्खननों का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। इसके अलावा वे म.प्र. व छत्तीसगढ़ के लगभग 30 जिलों के पुरातात्विक सर्वे से भी संबद्ध रहे। वर्ष 2006 में डॉ. पवन तिवारी द्वारा खुरई में इतिहास विषय में एक राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इसके दूसरे दिन का एक तकनीकी सत्र झा साहब के कहने पर एरण में आयोजित किया गया। उस सत्र की अध्यक्षता प्रो. झा ने ही की एवं मुझे एरण जैसे ऐतिहासिक स्थल पर शोध पत्र प्रस्तुत करने का मौका प्राप्त हुआ। प्रो. झा ने